International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 28-05-2022, Accepted: 13-06-2022, Published: 29-06-2022
Volume 8, Issue 3, 2022, Page No. 63-65

क्रांतिकारी महिला कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान

डॉ. ड़ी. मोहिनी
पोस्ट डॉकटोरल फ़ेलो, रमादेवी महिला विश्वविद्यालय, ओडिशा, भारत

सारांश
हिंदी साहित्य जगत की क्रांतिकारी महिला कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान हैं। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सुभद्रा जी का योगदान महत्वपूर्ण है। इनकी वाणी में देश प्रेम और विद्रोह की भावन मुख्य रूप से है। सुभद्रा कुमारी चौहान अपनी लेखनी से राष्ट्रीय चेतना का प्रसार करने वाली सर्वप्रथम महिला कवयित्री हैं। देशभक्त क्रांतिकारी सुभद्रा जी ने जीवन के अनेक पहलूओं को देखा और बहुत बार जेल भी गई। जेल में रहकर भी उन्होंने कैदियों की समस्याओं पर अनेक रचनाएँ लिखी। सुभद्रा जी द्विवेदी युग और छायावाद युग की राष्ट्रचेतना की कवयित्री हैं। सुभद्रा कुमार जी के कव्य में नारी की स्वाभिमान एवं गौरव गाथा का वर्णन कया है साथ ही नारियों का कर्तव्यपरायण रूप भी सामने लाया है। जब पूरा देश स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत था तब नारियों ने ही पुरुषों को आगे बढ़ने की हिम्मत दी।नारी सशक्तीकरण की आवाज़ सदैव उठती रहती है। सुभद्रा जी राष्ट्रभाषा और साहित्य की हमेशा सेविका रही हैं। उन्होंने साहित्य द्वारा राष्ट्रीय प्रेम और राष्ट्रीय चेतना का प्रसार करने का महान कार्य किया। विदेशी शासन की घोर निंदा भी की साथ ही भारतीय जनता पर हो रहे अकारण अत्याचारों का घोर विरोध किया।

मूल शब्दः क्रांतिकारी महिला, हिंदी साहित्य जगत, देश प्रेम और विद्रोह

प्रस्तावना
हिंदी साहित्य जगत की क्रांतिकारी महिला कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान हैं। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सुभद्रा जी का योगदान महत्वपूर्ण है। इनकी वाणी में देश प्रेम और विद्रोह की भावन मुख्य रूप से है। सुभद्रा कुमारी चौहान अपनी लेखनी से राष्ट्रीय चेतना का प्रसार करने वाली सर्वप्रथम महिला कवयित्री हैं। साहित्यकार सदैव अपने युग की परिस्थितियों से प्रभावित होकर साहित्य में समाज का बोध कराता है उसी प्रकार सुभद्रा जी भी अपने समाज से प्रभावित थी। सं १७०० के आस–पास अंग्रेजों ने भारत में प्रवेश किया और धीरे –धीरे अपने साम्राज्य विस्तार कर लिया। अपनी अहंकारपूर्ण व्यवहार और स्वार्थपूर्ण नीति भारतीय जनता पर थोपने लगे। पीड़ित जनता और लाचार शासक अंग्रेजों के प्रति अपना असंतोष दिखाया जिसके परिणाम स्वरूप सं १८५७ में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम घटित हुआ। जिससे वृहत राष्ट्रीयता का विकास हुआ। अंग्रेजों के दुर्व्यवहार के विरोध में कई देशभक्त उभरकर आए। उस समय समाज में नारी की दशा अत्यन्त दयनीय थी। नारी का मुख्य कार्य गृहस्थी संभालना और चारदीवारी के भीतर ही रहना। लेकिन समयानुसार सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन दिखाई दिया और नारी शिक्षा ग्रहण कर पुरुष के साथ समकक्ष होकर चलने लगी और सभी आंदोलन में भाग लेने लगी। जिसके प्रभाव में सं १९२३ में जबलपुर के झंडा सत्याग्रह का नेतृत्व सुभद्रा जी ने ही किया था।

एक बच्चा सामाजिक तौर–तरीके उसके परिवार से सीखता है और उसके व्यक्तित्व का विकास भी परिवार से होता है। सुभद्रा जी के व्यक्तित्व का निर्माण उनके परिवार से ही हुआ है। सुभद्रा जी के दादाजी ठाकुर महिपाल सिंह स्वाभिमानी व्यक्ति थे। एक समय में उन्होंने अंग्रेजों की सहायता करने से मना कर दिया जिसके फल स्वरूप उन्हें गाँव छोड़ना पड़ा। सुभद्रा जी के पिता रामनाथ सिंह जी को अल्प आयु में ही परिवार का भार सम्भालनी पड़ी। कर्तव्यनिष्ठ एवं सहनशील व्यक्ति थे तथा वे व्यवहार कुशल व्यक्ति थे। उनका विवाह धीराज कुँवर से हुई। जो प्राचीन विचारों वाली, पुरुषों की सेवा करना स्त्रियों का धर्म समझती थी। निम्न जाती के लोगों को घर की चौखट से बाहर ही रोक देती थी। सुभद्रा जी के भाई और बहन पूर्ण रूप से इसका विरोध करते थे। सुभद्रा जी का विवाह लक्ष्मण सिंह चौहान से हुआ। जो एक राष्ट्र भक्त और साहित्यकार भी थे। सुभद्रा जी के लिए उनके पति एक अच्छे मित्र , मार्गदर्शक, प्रेमी व सहायक थे। उनकी पुत्री सुधा चौहान लिखती हैं कि – "पति के रूप में उन्हें जो सहस्र मिला था, वह परम उदार विचरों वाला और सच्चे हृदय से उनको आदर देने वाला था।"[1] पति के रूप में एक मित्र मिला जो अपनी पत्नी को भरपूर समर्थन करते थे।

लक्ष्मण सिंह राष्ट्रीय चेतना से भरे नाटकों की रचना किया, पत्र–पत्रिकाओं का सम्पादन किया। उनके द्वारा लिखे गए नाटक 'कुलिप्रथा' व 'गुलामी नशा' को अंग्रेजों ने जब्त कर दिया। अपने पति के इस लेखनी एवं भाषा का प्रभाव सुभद्रा जी पर पड़ा। सुभद्रा जी बचपन से ही कल्पनाशील थी, सामान्य सी बातों में भी तुकबंदी कर देती थी। सुभद्रा जी का भाई राजबहादुर अपने डायरी में लिखते हैं– "सुभद्रा अत्यंत शीघ्र कविताएँ लिख डालती, स्कूल के काम की कविताएँ तो वह साधारणतरू घर से जाते – जाते इक्के में ही लिख लेती थी।"[2]

देशभक्त क्रांतिकारी सुभद्रा जी ने जीवन के अनेक पहलूओं को देखा और बहुत बार जेल भी गई। जेल में रहकर भी उन्होंने कैदियों की समस्याओं पर अनेक रचनाएँ लिखी। सुभद्रा जी द्विवेदी युग और छायावाद युग की राष्ट्रचेतना की कवयित्री हैं। उन्होंने राजनैतिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक आदि प्रसंग को लेकर काव्य प्रणयन किया है। जैसे 'झांसी की रानी', 'राखी', 'रक्षाबंधन', 'विजयादशमी' आदि। राष्ट्र प्रेम में डूब कर उन्होंने देश के प्रत्येक तत्व की मुक्त कंठ से गुणगान

किया है साथ ही देश की भूमि, भाषा, संस्कृति, धर्म आदि को प्रमुखता दी है। क्रांतिकारी भावना की प्रमुख कवयित्री राष्ट्रीयता के प्रसार के लिए अतीत के प्रेरणास्रोत गाथाओं का वर्णन किया है। सुभद्रा जी की कालजयी कविता 'झांसी की रानी' प्राचीन गौरव का वर्णन करती है–

"सिहांसन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटि तानी थी।
बूढ़े भारत में भी आयी फिर से नयी जवानी थी।
गुमी हुई आजादी की ईंट सबने पहचानी थी।
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।
चमक उठी सं सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी।
बुंदेले घरवालो के मुंह, हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो, झांसी वाली रानी थी।"[3]

यह कविता तत्कालीन क्रांति की आग को और सुलगाने का काम कर रही थी। झांसी की रानी लक्ष्मी बाई के शौर्य और पराक्रम का वर्णन इसमें पूर्ण मनोवेग के साथ किया गया। इस कविता से सभी लोग प्रभावित थे।
लगभग सभी साहित्यकार अपने साहित्य में मातृभूमि का वर्णन किया है उसी प्रकार सुभद्रा जी के साहित्य में भी मातृभूमि का करुणिक चित्र अंकित हुआ है। 'वे कुंज' नामक कविता में कहती हैं –

"विष्णुता ने दिया दान ले लिया।
शुक्लता गयी , अँधेरा मिला।
मातृ –मंदिर में सुने खड़े,
मुक्ति के बदले मरन मिला।"[4]

भारतीय जनता का हाल मृत व्यक्ति के समान है। जिन्दा तो हैं पर कुछ कर नहीं सकते। इस परिस्थिति का विरोध कर लोगों में राष्ट्रप्रेम जगाने के लिए कहती हैं–

"विजयिनी माँ के वीर सुपुत्र पाय से ले असहयोग ठन।
गूंजा डाले स्वराज्य की तान,
और सब हो जावें बलिदान।
जरा ये लेखनियाँ उठा पड़े,
मातृभूमि को गौरव से मढ़े।
करोड़ों क्रांतिकारिणी मूर्ति,
पलों में निर्भयता से गढ़े।"[5]

विजयदशमी कविता के जरिए देश में क्रांति लाने की प्रयास किया है। यह राम रावण पर विजय का प्रतिक है। सुभद्रा जी राम कथा का उल्लेख तत्कालीन भारतीय परिस्थिति को सामने रखती हुई करती हैं अर्थात रावण रूपी अंग्रेजी , राम रूपी भारत की सीमा रूपी सम्पदा का हरण कर रहे हैं। जनता को प्रेरणा दे रही हैं कि रावण रूपी अंग्रेजों को भगाओ–

"रामचंद्र की विजय–कथा का,
भेद बता आदर्श सखी !
पराधीनता से छूट यह,
यारा भारतवर्ष सखी।"[6]

सुभद्रा जी ने अपने कविताओं में समसामयिक घटनाओं को स्थान दिया ताकि लोगों में राष्ट्रप्रेम का प्रसार हो जाए 'जलिया वाले बाग में बसंत' कविता सं १६१६ में पंजाब के अमृतसर के जलिया वाला बाग हत्याकांड का बर्बर चित्र वर्णित है–

"कोमल बालक मरे यहाँ गोली खा–खाकर।
कलियाँ उनके लिए गिराना थोड़ी लाकर।
आशाओं से भरे ह्रदय भी छिन्न हुए हैं।
अपने प्रिय –परिवार देश से भिन्न हुए हैं।"[7]

सं १६३१ में सुभद्रा जी को सेकसरिया पुरस्कार मिला इसकी सार्थकता पर अपनी राष्ट्रभक्त ह्रदय का परिचय देते हुए 'पुरस्कार' कविता में सुभद्रा जी ने लिखा–

"इस बुंदेलों की झाँसी में,
शस्त्रों बिना तार कैसा ?
देश–प्रेम की मतवाली को,
जननी ! पुरस्कार कैसा" [8]

सुभद्रा कुमार जी के कव्य में नारी की स्वाभिमान एवं गौरव गाथा का वर्णन कया है साथ ही नारियों का कर्तव्यपरायण रूप भी सामने लाया है। जब पूरा देश स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत था तब नारियों ने ही पुरुषों को आगे बढ़ने की हिम्मत दी। श्राखी की चुनौती 'कविता में बहन द्वारा भाई को कही गई प्रेरणा पूर्ण बातें –

"जाते हो भाई ? पुन: पूछती हूँ,
कि माता के बंधन की है लाज तुमको ?
तो बंदी बनो, देखो बंधन है कैसा,
चुनौती यह राखी की है आज तुमको।"[9]

सुभद्रा जी के काव्य की नारी स्वार्थ को परे रखकर आत्मसम्मान के लिए जीती है। साथ ही पुरुष को अपने कर्तव्य में आगे बढ़ने की प्रेरणास्रोत देती है। यह नारी अपने स्वाभिमान के लिए कुछ भी कर सकती है और उसके लिए आत्म –त्याग करने के लिए पीछे नहीं हटती है। 'विदाई' कविता में लिखती हैं –

"मेरे आगे स्वार्थ खड़ा है उनके आगे कर्तव्य।
मूर्ख भवना उन्हें रोकने की, क्या हो सकती है क्ष्यंतव्य"[10]

उपसंहार

सुभद्रा जी अपने काव्य के जरिए देश में क्रांति की भावना पैदा करना साथ ही राष्ट्र के प्रति मोह जगानेवाली विषयों को लेकर चली हैं। नारी दशा का भी चित्रण हुआ है। नारी सशक्तीकरण की आवाज़ सदैव उठती रहती है। सुभद्रा जी राष्ट्रभाषा और साहित्य की हमेशा सेविका रही हैं। उन्होंने साहित्य द्वारा राष्ट्रीय प्रेम और राष्ट्रीय चेतना का प्रसार करने का महान कार्य किया। विदेशी शासन की घोर निंदा भी की साथ ही भारतीय जनता पर हो रहे अकारण अत्याचारों का घोर विरोध किया। कवयित्री महात्मा गाँधी जी के आदर्शों को अपनाते हुए जन मानस को उस रास्ते पर चलने की प्रेरणा भी दी है।

संदर्भ सूची

1. सुधा चौहान वर्तमान साहित्य जैसा जीवन जिया, पृ. ६
2. सुधा चौहान, मिला तेज से तेज, पृ. ४१
3. सुभद्रा कुमारी चौहान, सुभद्रा समग्र, झाँसी की रानी, हंस प्रकाशन, इलहाबाद २००० पृ. ५६
4. सुभद्रा कुमारी चौहान, सुभद्रा समग्र, वे कुंजे, हंस प्रकाशन, इलहाबाद २००० पृ. ६१
5. सुभद्रा कुमारी चौहान, वे कुंजे, हंस प्रकाशन, इलहाबाद २००० पृ. ६२
6. सुभद्रा कुमारी चौहान, सुभद्रा समग्र, विजयदशमी, हंस प्रकाशन, इलहाबाद २००० पृ. ८०
7. सुभद्रा कुमारी चौहान, सुभद्रा समग्र, जलियावाला बाग में बसंत, हंस प्रकाशन, इलहाबाद २००० पृ. ११४
8. सुभद्रा कुमारी चौहान, सुभद्रा समग्र, पुरस्कार, हंस प्रकाशन, इलहाबाद २००० पृ. ११४
9. सुभद्रा कुमारी चौहान, सुभद्रा समग्र, राखी की चुनौती, पृ. ६७
10. सुभद्रा कुमारी चौहान, सुभद्रा समग्र, विदाई, पृ. १६३